409
H
81 P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1226
10/74

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 409

S/1811

गांधी-विजय

अर्थात

आज़ाद-भारत

संग्रह कर्ता—

विश्वनाथ शर्मा

प्रथमबार १००० }
सन् १९३० }

हक स्वाधीन है

{ मूल्य
-)॥

मुद्रित
देशबन्धु प्रेस बाराबङ्की।

891.431
Sh235h.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 409
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

परतंत्रता में कब तक रोते पड़े रहोगे
तुम जन्म सिद्ध अपना अधिकार भारतीयो
विष बीज और कब तक बोते पड़े रहोगे

॥ भारत का कर्ज़ा ॥

दिक्कतें लाखों तुम्हें सर पे उठाना होगा
कर्ज भारत का तुम्हें आज चुकाना होगा
फर्ज हर शख्स का है देश की सेवा करना
कौम के वास्ते अब सरको कटाना होगा
छोड़ दो वस्त्र विदेसी व विदेसी चालें
वतन के वास्ते चर्खा तो चलाना होगा
मनाता हूँ तुम्हें तुम मान जाओ हे भाई
नहीं तो प्रेमी का फिर कौन ठिकाना होगा

॥ गजल ॥

उठो उठो अब हे हिन्द बासी कलेस काफी उठा चुके हो
विशाल भारत हुआ है गारत तमाम दौलत लुटा चुके हो
रहे न कपड़े तुमारे तनपर न घर में खाना है एक दिनका
बिनाश अपने की अबतो सबही सामग्रियां तुम जुटा चुकेहो
पड़े रहोगे पतन में कबतक खा बूट जूतों की ठोकरें तुम
रही तिजारत कला न कौशल रहे न धन्धे बने हो अन्धे
रही मजूरी ही भाग्य में अब कुली हो किस्मत फुटा चुकेहो
तुम्हीं बतादो तुम्हारे घरमें रहा है अब क्या धन धान्य बाकी

विदेशियों से समस्त वैभव कपास सहस उठा चुके हो
वही हो तुम जो किसी समय पर सिरोमणि थे समस्त जगके
निज सूरताई से सत्रुओं के समर में छक्के छुटा चुके हो

॥ गजल ॥

खुदा ये कैसी मुसीबतों में ये हिन्द वाले पड़े हुये हैं
कदम कदम पर हमारी खातिर सितम के जाले पड़े हुए हैं
हमारे आये जो महमां बनकर वो जुल्म करने लगे हमीं पर
गजब ये कैसा मकां के बाहर मकान वाले पड़े हुये हैं
सिरों पे दुश्मन खड़े हुए हैं दिलों में छाले पड़े हुये हैं
जिगर पै नस्तर बने हुए हैं दिलों में छाले पड़े हुए हैं
हजारों बच्चों के बाप बिछड़े वो तेग किस्मत से हो के टुकड़े
सुहागिनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुये हैं
हवा जमाने बिगड़ी एकदम तो जुल्म होने लगे सरासर
सुनायें फर्याद जाके किसको जबां से ताले जड़े हुए हैं

गजल

भारत में डङ्का आजादी का बजवा दिया गाँधी बाबा ने
सत्याग्रह का झण्डा आलम फहरा दिया गाँधी बाबा ने
सर पर गठरी थी गुलामी की अति दूर थी हमसे आजादी
बनकर प्रहलाद हमें सत्पथ दिखला दिया गाँधी बाबा ने
घस गये विदेशी घर में थे सब माल लूट कर ले जाते
सद शुक्र हाथ सोतों का पकड़ बिठला दिया गाँधी बाबाने
पैंसठ करोड़ धन जाता था प्रति बर्ष विदेशी कपड़ों से

दल मन्त्र विदेशी बहिष्कार सिखा दिया गांधी बाबा ने
दे ज्ञान हमें चर्खे का पुनि खद्दर का बाना पहना कर
दिल गोरे चमड़े वालों का दहला दिया गांधी बाबा ने
निश्चय ही दिवाला निकलेगा मैनचेस्टर लङ्काशायर का
गर उस पथपर हम चलें सभी जो बता दिया गाँधी बाबाने
टूटा कानून नमक ज्यों ज्यों यों ही प्रसिद्ध सब टूटेंगे
है सद् अवज्ञा का पथ अब दर्शा दिया गाँधी बाबा ने
सत्याग्रह करके नवयुवको भारत माँ को आजाद करो
बस यही विजयका मार्ग हमें बतला दिया गाँधी बाबा ने

ग़ज़ल

सुजन सन्तों को सतयुग है
बदों को बद ज़माना है
हमें वह कृष्ण मन्दिर है
तुम्हें वह जेलखाना है

इन गांधी टोपी वालों ने ।

इक लहर चला दी भारत में इन गांधी टोपी वालों ने ।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने
सदियों की गुलामी में फंस कर, अपने को भी जो भूले थे
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सुपूत हो माता के ।
सर्वस्व त्याग का मंत्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बनकर भी

उनको सत्पथ पर चला दिया, इन ग[illegible]ी टोपी वालों ने ॥
पट बंद हुये कितने मिल के, लङ्काशायर भी चीख उठा
चरखे सा चक्र चलाया जब इन गांधी टोपी वालों ने
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं
नेता गाँधी को बना लिया इन गांधी टोपी वालों ने
अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो
माना गांधी का कहना यह, इन गांधी टोपी वालों ने
है विकट समस्या टीस की भी, उसको भी हल करना होगा
जरिया बस एक निकाल लिया इन गांधी टोपी वालों ने
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं
चुन लिया जवाहर को राजा इन गांधी टोपी वालों ने
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने

श्री विष्णुमित्र विद्यार्थी 'दग्ध'

गज़ल

थे हम भी कभी जाँबाज वतन ऐ चर्ख हमें बरबाद न कर
जिंदा हैं मगर यह जीस्त नहीं अब और सितम ईजाद न कर
जर और जवाहर सारा लुटा सब शान गई नादार बने
फैशन ऐ लुटाते मुल्कका जर नाशाद को क्यों तू शाद न कर
जब गांधी जीने जोर दिया जेलों के उधर दरवाजे खुले
हम आहोबुका से काम जो लेते हैं दाद फरयाद न कर

गोल मेज का तोफा जो दिया हमें नादान खुशी से उछने लगे
क्या जाल बिछाया हिकमत का बातोंमें फकत आजाद नकर
काँग्रेस ने ज्यों देखा रङ्ग बुरा, दिया डङ्का बजा आजादी का
हे कृष्णमुरारी करतू मदद, मजलूम को अब बेदाद न कर

गजल

जो करते हो मुझपर सितम देख लेना।
अलम का नतीजा अलम देख लेना॥
लगे बा मुकाबिल अगर गन मशीनें।
अड़ा देंगे छाती को हम देख लेना॥
अजी भूमि भारत के खातिर मरेंगे।
हटेगा न पीछे कदम देख लेना॥
रहे मांग स्वाधीनता की बराबर।
मेरे जब से है दम में दम देख लेना॥
ठनी जो है दिल में ठनी ही रहेगी।
अगर जांय मुल्के अदम देख लेना॥
अहिंसा न छोड़ेंगे ऐ मारकण्डे।
मुझे तो है गंगा कसम देख लेना॥

गजल

करेगी बिल्कुल तबाह हालत शराबियों ऐ शराब तुमको।
सराब पीना दो छोड़ मुतलक किया है इसने खराब तुमको
कमाई पसीने की तुम क्यों व्यर्थ पानी में फेंकते हो॥
समझलो इसका खुदा के घरमें। पड़ेगा देना जवाब तुमको

तड़पते बच्चे तुम्हारे भूखे न तन पे कपड़ा रहा है उनके।
खरच ये रुपये उन्हीं के हकमें करोगे होगा सवाब तुमको
शराब पीना किया मना है धरम सभी में कहा गुना है।
उठादो मिलकर शराबखोरी नहीं तो होगा अजाब तुमको

स्वदेशी प्रीति

अब स्वदेसी से हमें भी दिल लगाना चाहिये।
औ विदेसी माल से नफरत बढ़ाना चाहिये॥
अतलसें कमख्वाब साटन और मखमल की जगह।
खास खद्दर के हमें कपड़े सिलाना चाहिये॥
इस स्वदेशी से करोड़ों की बचत हो जायगी।
ख्याल भद्दे पन का कुछ दिलमें न लाना चाहिये॥
कुल विदेशी वस्तुओं का करके यक दम बायकाट।
अब हमें बिगड़ी हुई इज्जत बनाना चाहिये॥
इस विदेसी ने हमें ऐयास मुफलिस कर दिया।
इसलिये हरगिज न इसके पास जाना चाहिये॥
हुक्म गांधी का यही औ अर्ज है सरजू की यह।
ऐ रईसो तुमको भी चर्खा चलाना चाहिये॥

चरखा

अहा हा आगया देखो हमारा फिर वही चर्खा।
करेगा पूर्ववत जो देश में धन धान्य की वर्षा॥
हम अपना भूल कर चर्खा पड़े थे चर्खे गर्दिश में।
गुलामी से हमें फिर मुक्त कर देगा यही चर्खा॥

जलेंगे पेट ज्वाला से न भारत पुत्र अब लाखों ।
भरेगा पेट उन सबका हमारा अन्नदा चरखा ॥
डरें अब क्यों भला हम जेल फांसी की सजाओं से ।
हमारे हाथ में अब आ गया है अन्नदा चर्खा ॥
जगत में हमभी तो कुछ हैं हमारी शान भी कुछ है ।
सुरीली तान से अपनी सुना देगा यही चर्खा ॥
न तन ढकने को हम मुहताज होंगे लङ्काशायर के ।
हमारे तनको ढक देगा हमारे घर का बस चर्खा ॥
दिया जो मंत्र मोहन ने उसे अब हम न भूलें गे ।
दिलाये गा स्वराज हमको हमारा बस यही चर्खा ॥

गङ्गानारायण द्विवेदी

एकता की पुकार

कृष्ण या करीम की कुदरत अलग कोई नहीं ।
अल्लाह या ईश्वर तेरी सूरत अलग कोई नहीं ॥
पान गङ्गाजल करो या आब जमजम का पियो ।
जल तत्व इनमें एक है रङ्गत अलग कोई नहीं ॥
महादेव तो मन्दिरमें हैं औ मुस्तफा मसजिदमेंहैं
है पुरान कुरान की आयत अलग कोई नहीं ॥
राम या रहिमान हों एक सीप के मोती हैं दो ।
मुल्ला पुजारी की इबादत है अलग कोई नहीं ॥
नर्क या दोजख बुरे हैं पापियों के वास्ते ।
हिन्दुओं के स्वर्ग से जन्नत अलग कुछभी नहीं ॥

हिन्दु मुसलिम पारसी ईसाई यहूदी क्रिश्चियन ।
एक पिता के पुत्र हैं माता अलग कोई नहीं ॥

रण्डियों को हुक्म

हुक्म गांधी का सर आंखों से बजाना होगा ।
रंडियो तुमको भी चरखा तो चलाना होगा ॥
सर्जजालीवचिकन अतलसी मखमल की जगह ।
अपने गाढ़े से तुम्हें प्रेम बढ़ाना होगा ॥
फेन्सी साड़ियां बी साहबा पहना न करो ।
स्वदेसी धोती से अब दिल को लगाना होगा ॥
लेवेंडर सेन्ट की एवज़ में ऐ परी रूओ ।
इत्र देसी तुम्हें मलना व मलाना होगा ॥
बना है जिस्म तुम्हारा ये बदौलत जिसकी ।
इस वतन के लिये कुछ करके दिखाना होगा ॥
चलाओ चरखा तो घर बैठे होमरूल मिलै ।
स्वराज्य लेने कहीं दूर न जाना होगा ॥
तमन्ना सरजू की यक रोज़ ये पूरी होगी ।
कि ज़ालिमों का नहीं दुनियांमें ठिकाना होगा ॥

ईश्वर विनय

दुख दूर कर हमारा संसार के रचैया ।
जल्दी से दो सहारा मँझधार में है नैया ॥
तुम बिन कोई हमारा रक्षक नहीं यहां पर
ढूंढा जहान सारा तुमसा नहीं रखैया ॥

दुनियां में खूब देखा आंखें पसार करके।
तेराही नाम प्यारा दुख दर्द से बचैया॥
चारों तरफसे हमपर गमकी घटायेंछायीं।
सुख का करो उजाला परकाशके करैया॥

गजल

जो दिल में बस रही है तस्वीर अब नहीं है।
बाकी निशानियां हैं तामीर वह नहीं है॥
कांपा फलक था जिससे चक्कर में आगया था।
आहें वही हैं लेकिन तासीर वह नहीं है॥
एक दिन था हिन्द का वह जब तूती बोलती थी
पर जग में आज इसकी तौकीर वह नहीं है॥
अब जिस्म वह नहीं है अब ज्ञान वह नहीं है।
अब अक्ल वह नहीं है अब तीर वह नहीं है॥
सीने में दिलको दिलको कानों को छेदता है।
समसीर वह नहीं है अब तीर वह नहीं है॥
आलम में धूम जिसकी एकदिन मची हुई थी।
कस बलभरी हुई अब बन्दूक वह नहीं है॥
सब स्वार्थ के नशे में दीवाने हो रहे हैं।
बांधे जो धर्म की अब जंजीर वह नहीं है॥
दम बन्द साकिये हैं खौफे जुबान बन्दी।
बज्मे सखुन में बाकी तकरीर वह नहीं है॥
मुरदा परस्ती का है दुनियां में दौर दौरा।

कहते हैं लोग तेरी तहरीर वह नहीं है ॥
अगले जो लिख गये हैं विधना के हैं वह अक्षर।
पर तू जो बक रहा है तकदीर वह नहीं है ॥
मुझको निगम का कहना इसका फकत यही है।
मैं और कुछ हूँ कहता तकरीर वह नहीं है ॥

गजल

करदे कतल खुशीसे हमको उजर नहीं है।
प्यारा है धर्म अपना जितना कि सर नहीं है
होने को है मुसलमां दो बन्धु में न कोई।
दीवार में चुनेंगे इसका भी डर नहीं है ॥
माता पिता हमारे सिखला चुके हैं हमको।
मरना सभी को होगा कोई अमर नहीं है ॥
हम धर्म बेच अपना लेंगे न जिन्दगी को।
हैं राज के न भूखे दरकार जर नहीं है ॥
जिसने मनुष्य होकर रक्षा न की धरम की।
सींगों से हीन पामर पशु है वो नर नहीं है ॥
जिस पुत्र ने पिता की मानी नहीं नसीहत।
कहने को वो पिसर है लख्तेजिगर नहीं है ॥

पते की बात

खुदा में अगर कुछ खुदाई न होती।
खिलाफत तरक्की भी पाई न होती ॥
तिलकगांधी कुछ न कर सकते उनका

जो अपने दिलों में बुराई न होती ॥
न तैयब व आजाद फिर जेल जाते ।
कुरां की इजाजत जो पाई न होती॥
जहां गांधी की न जय जय मनाता ।
अगर दिलमें उनके सफाई न होती ॥
न निगमनंद हरगिज पता ये बताता
अगर मेल से लौ लगाई न होती ॥

गजल

हया औ शर्म तजि रंडी सरे महफिल नचाई है ।
न समझो इसमें कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है ॥
निगाहे बद से देखैं बाप बेटा और भाई सब ।
कहो यह मां हुई भाभी बहू अथवा लुगाई है ॥
दिखा कर नाच औ रुपया नजर उनसे दिला करके
अरे अन्यायियो बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है ॥

महात्मा गांधी की ग्यारा शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारा शर्तें अमलमें लाकर दिखाना होगा ।
प्रजाकेकदमोंमेंअबसितमगर सरअपना तुझको झुकाना होगा ॥
नसीली चीजें शराब गांजा अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं ।
खरीद बिक्री जहां के अन्दर नहीं तुम्हें अब करना होगा ॥
हमारे सिक्के की दर जो साहब घटा बढ़ा करके बेचते हो ।
दोपक शिलिङ्ग चारपेनही का ये करके तुमको दिखाना होगा ॥
जमीन का भी लगान आधा कृषक भी जिसमें जरा सुखी हों ।

विभाग इसका हमारी कौंशिल के ताबे तुमको कराना होगा ॥
लगाय रक्खा निमक पे करजो उठालो इसको करो न देरी ।
है फौज पल्टन का खर्च जो कुछ उसेभी आधा घटाना होगा ॥
बड़े बड़े अफसरों की तनख्वाह आधी करदो या और कुछकम।
घटी हुई आमदनी से साहब ये खर्च अपना चलाना होगा ॥
स्वदेसी कपड़े की उन्नती की लिये विदेसी वसन के ऊपर।
लगाओ कर उनपे चौगुना तुम नियम ये ऐसा बनाना होगा ॥
जहाज व्यापर के लिये जो हमारे चलते समुद्र में हैं ।
लगाया तुमने जो करहै साहब वो जल्द तुमको हटाना होगा ॥
जिन्हें कि हत्या के जुर्म में है मिली सजा उनको छोड़ करके।
जो रातनीतिक हमारे कैदी हैं उनकी बन्दी कटाना होगा ॥
जो राजनीतिक के मामले चल रहे हैं उनको उठाओ साहब ।
व एकसौचौबीस की सारी लगभग दफायें रद्दी कराना होगा॥
हमारे लीडर विदेशों को जो पठाये जबरन गये हैं साहब।
स्वदेश आने का हुक्म उनके लिये भी साहब सुनाना होगा ॥
विभागखुफिया पुलिसका तोड़ो या उसपे अधिकारहो हमारा।
व आत्म रक्षा के हेतु हमको भी चेम्पियनगन बधाना होगा ॥

* इति *

निवेदन

प्यारे भाइयो आप को विदित हो कि हमारे यहां हर प्रकार की दवा मुफ्त भेजी जाती है जैसे दमा, खांसी पुरानाबुखार, हैजा, नमर्दी प्रदर, गरमी इत्यादि इन सब बीमारियों को बतौर नमूना मुफ्त भेजा जाता है डाक खर्च के वास्ते ।) आने का टिकट भेजना जरूरी है और हर प्रकार की पुस्तकें किफायत के साथ मिलती हैं ।

सस्ती पुस्तकें मिलने का पता—
बिश्वनाथ शर्म्मा
जिला बाराबङ्की ।
मो० कानूनगोयान,